बी. एस. विलायत

युवा लीडर
एक नई शुरुआत का सपना

गिरिराज अग्रवाल

युवाओं की दुनिया उम्रदराज लोगों से इस मायने में अलग होती है कि वे पूर्वाग्रहों को छोड़कर हर पहल में अपने साथ ताज़ा हवा का झोंका लाते हैं। आदान-प्रदान कार्यक्रमों के तहत पिछले कुछ सालों में अमेरिका गए दक्षिण और मध्य एशिया के युवाओं से बातचीत ने इस सोच को और पुष्ट कर दिया। ये लोग बीते जमाने के पूर्वाग्रहों को किनारे कर दुनिया को नई दृष्टि से देखना चाहते हैं। ऐसी दृष्टि जो स्थानीय समस्याओं को हल करने की प्रतिबद्धता दिखाने के साथ ही वैश्विक सोच रखती हो। दुनिया में परिवर्तन का वाहक बनने की इच्छा रखने वाले ये युवा नए विचारों और ऊर्जा से लैस हैं। भारत, बांग्लादेश, पाकिस्तान, कज़ाखस्तान, ताजिकिस्तान और अफगानिस्तान के ऐसे ही 50 से ज़्यादा युवा लीडर अप्रैल 2007 में नई दिल्ली और फ़रीदाबाद में अमेरिकी दूतावास के सांस्कृतिक मामलों के विभाग और यूसेफी द्वारा प्रायोजित क्षेत्रीय युवा लीडर सम्मेलन में भाग लेने आए थे। फ़रीदाबाद के विद्या संस्कार स्कूल ने इस आयोजन में साथ निभाया। ये वे युवा हैं जो यूथ एक्सचेंज एंड स्टडी (यस), साउथ एशिया अंडरग्रेजुएट स्टूडेंट्स लीडरशिप इंस्टीट्यूट (सॉसली) और फ़्यूचर लीडर्स एक्सचेंज (फ़्लेक्स) कार्यक्रमों के तहत अमेरिका गए थे और छह हफ़्तों से लेकर लगभग एक साल तक वहां रहे और मीठी यादें लेकर लौटे।

पाकिस्तान की साना इम्तियाज़ मुल्तान के बहाउद्दीन जकरिया विश्वविद्यालय में अंग्रेजी पढ़ाती हैं। वह वर्ष 2005 में सॉसली कार्यक्रम के तहत पेन्सिलवैनिया के डिकिन्सन कॉलेज में गईं और छह हफ़्ते अमेरिका में रहीं। वहां से वापसी के बाद वह खुद में बड़ा बदलाव पाती हैं। अमेरिका की यात्रा ने सामुदायिक सेवा और बढ़िया से बढ़िया तालीम हासिल करने के प्रति उनका नजरिया बदल दिया। वह कहती हैं, ''अमेरिका में हर व्यक्ति, छोटा हो या बड़ा, अपने मुल्क की बेहतरी में हाथ बंटाता है। हम चाहेंगे कि पाकिस्तान में भी ऐसा हो और युवा भी समाज सेवा के कामों में भागीदारी करें। फिलहाल हमारे यहां स्वयंसेवा से जुड़े कामों के लिए प्रशिक्षण का अभाव है और न ही स्थायित्व है। अमेरिकी अनुभव इस खाई को भरने में हमारी मदद कर सकता है।'' यही नहीं, उन्होंने अपनी इस यात्रा में भारत और बांग्लादेश के साथी भागीदारों के साथ दोस्ती भी गांठी।

बांग्लादेश के ए. के. एम. तौहिदुल इस्लाम भी वर्ष 2005 में सॉसली कार्यक्रम के तहत पेन्सिलवैनिया के डिकिन्सन कॉलेज गए थे और अब ढाका में आशा नामक गैरसरकारी संगठन में काम कर रहे हैं। बांग्लादेश यूनिवर्सिटी ऑफ इंजीनियरिंग एंड टेक्नोलॉजी से कंप्यूटर विज्ञान और अभियांत्रिकी में स्नातक इस्लाम कहते हैं, ''मैं जब न्यू यॉर्क में ग्राउंड जीरो (वह जगह जहां वर्ल्ड ट्रेड सेंटर था) पर गया तो रोने लगा। वहां की खामोशी और मारे गए लोगों के नामों की सूची देखकर मुझे कुछ हो गया। मैंने जाना कि विरोध का यह तरीका बिल्कुल नहीं हो सकता।'' इस्लाम के मन को भी अमेरिका में सामुदायिक सेवा के तौरतीकों ने बेहद प्रभावित किया। वह कहते हैं, ''युवा लीडर इतिहास के बंधनों से चिंतित नहीं हैं। वे मिलकर काम करना चाहते हैं। इस तरह के युवा सम्मेलन विभिन्न देशों के युवाओं को एक-दूसरे को समझने में मदद करते हैं। उनकी इच्छा है कि हर देश में इस तरह अमेरिका गए युवा लीडर एक संघ बनाएं और विश्व समुदाय को बेहतर बनाने के लिए आपस में संपर्क रखें।''

आदान-प्रदान कार्यक्रमों के तहत अमेरिका गए हर युवा का अपना कोई न कोई खास अनुभव रहा है। किसी का दिल अमेरिकी लोकतंत्र ने जीत लिया तो किसी को अमेरिकी स्वागत-सत्कार अच्छा लगा। कोई अमेरिकी तर्ज़ पर अपने देश में सामुदायिक सेवा शुरू करना चाहता है तो कोई गरीबों के लिए तालीम देने का काम। खास बात यह है कि ज़्यादातर को लगता है

''अमेरिका जाने से पहले मुझे बहुत कम जानकारी थी कि अमेरिकी किस तरह का व्यवहार करेंगे... मैंने सोचा कि वे नस्लवादी हो सकते हैं और दूसरे धर्मों और संस्कृतियों के प्रति उनका रवैया अनुदार होगा। लेकिन अमेरिका में रहने के बाद मेरे ये विचार काफी हद तक बदल गए हैं। अमेरिका में हम जहां भी गए, लोगों ने हमारा स्वागत किया। सब कुछ बहुत बढ़िया रहा।''

वरा करीम, बांग्लादेश
सॉसली प्रोग्राम की सदस्य, 2005

साभार: वरा करीम

युवा लीडर सम्मेलन के लिए भारत आए विभिन्न देशों के युवा नई दिल्ली में यूसेफी कार्यालय के परिसर में। सम्मेलन में भाग लेने वाले सभी युवा शैक्षिक आदान-प्रदान कार्यक्रमों के तहत अमेरिका में रहे थे।

"विद्यार्थी आदान-प्रदान कार्यक्रमों से हममें अन्य संस्कृतियों का सम्मान करने और उनके प्रति उदारता का भाव आता है। ये कार्यक्रम हमें ज़्यादा ज़िम्मेदार बनाते हैं और नेतृत्व के गुण सिखाते हैं। अमेरिका में मैंने लोगों को खुले दिल का पाया। वहां युवाओं द्वारा किए जाने वाले सामुदायिक कार्यों से मैं बहुत प्रभावित हुई और अपने देश में इसी तरह की कोई पहल करना चाहूंगी।"

नेलया खैरोवा, कज़ाखस्तान
फ़्लेक्स प्रोग्राम की सदस्य, 2004

फोटो: अंजुम नर्वी

कि उनका आत्मविश्वास पहले की अपेक्षा बढ़ गया है और उनमें नेतृत्व क्षमता विकसित हुई है जिससे वे अपने देशों में नई पहल करने का साहस कर सकते हैं।

भारत के ओवैस अली भी अपने अमेरिकी प्रवास से खासे प्रसन्न हैं। कश्मीर विश्वविद्यालय से स्नातक और नई दिल्ली में आयरलैंड दूतावास में काम करने वाले अली वर्ष 2004 में सॉसली कार्यक्रम के तहत चेस्टरटाउन, मैरीलेंड गए थे। वह कहते हैं, "अच्छा अनुभव था। पूर्वाग्रह खत्म हुए। दूसरे देशों की संस्कृतियों को जानने-समझने का मौका किसी भी व्यक्ति के सोचने का दायरा बढ़ा देता है।" कजाख लॉ यूनिवर्सिटी से अंतरराष्ट्रीय कानून का अध्ययन कर रही कजाखस्तान की नेलया खैरोवा फ़्यूचर लीडर एक्सचेंज कार्यक्रम के तहत एक साल तक अमेरिका में रहीं। उन्हें लगता है कि उनमें ज़िम्मेदारी की भावना विकसित हुई है। उन्हें थैंक्सगिविंग डे जैसी अमेरिकी परंपराएं अच्छी लगीं। पाकिस्तान की सानिया अली खान यस कार्यक्रम के तहत वर्ष 2005 में दस महीने के लिए एन हार्बर, मिशिगन के विटमोर लेक हाई स्कूल गई थीं। अमेरिका में स्वयंसेवा ने उन पर भी गहरी छाप छोड़ी और अब वह इस्लामाबाद में एक गैरसरकारी संगठन में समन्वयक की भूमिका निभा रही हैं। पाकिस्तान की ही सारा आलम वर्ष 2004 में आदान-प्रदान कार्यक्रम के तहत अमेरिका गई थीं और वहां से आने के बाद समाज सेवा के लिए एक गैरसरकारी संगठन शुरू किया। इसी तरह बांग्लादेश की वरा करीम को अमेरिका में यहूदी परिवार के साथ रहना इतना भाया कि उस परिवार से अब भी लगातार संपर्क बनाए हुए हैं।

भारत में इन युवा लीडरों के सम्मेलन का उद्देश्य था उन्हें ज़्यादा सशक्त बनना और परस्पर समझ विकसित करना। सम्मेलन में नागरिक ज़िम्मेदारी, लोकतंत्र, टकराव का समाधान, सहनशीलता, सामुदायिक सेवा और परस्पर समझ जैसे मसलों पर चर्चा हुई। इन युवा लीडरों को सम्मेलन के दौरान अमेरिकी गैरसरकारी संगठन अमेरिकन फील्ड सर्विस (एएफएस) के विशेषज्ञों ने नेतृत्व क्षमता के बारे में प्रशिक्षण भी दिया। एएफएस ही भारत में अमेरिकी दूतावास के पब्लिक अफेयर्स विभाग की ओर से यस प्रोग्राम का संचालन करता है। एएफएस इंटरनेशनल के मुख्य विकास एवं ब्रांडिंग अधिकारी ऐब स्कोवडैल ने बताया कि युवाओं के एक्सचेंज प्रोग्राम का संचालन चुनौतीपूर्ण लेकिन दिलचस्प होता है। उनकी कोशिश होती है कि युवा अपने अमेरिकी प्रवास के दौरान जितने ज़्यादा अनुभव हो सकें, बटोरें और फिर अपने देशों में सकारात्मक कार्यों की पहल करें। स्कोवडैल के अनुसार हम चाहते हैं कि आदान-प्रदान कार्यक्रम एक ऐसी शुरुआत इन युवाओं को दें कि वे विभिन्न चुनौतियों से निपटने के लिए खुद पहल करें और उनमें दूसरों की संस्कृति जानने-समझने की भूख और बढ़े।